हिन्दू–मुस्लिम मूल्यों में समानता

डॉ0 हैदर मेहदी
समाजशास्त्र विभाग
ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

सार

समाज में जहाँ अनेक भिन्नतायें देखने को मिलती हैं वहीं समानताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। भिन्नता नामों, संस्कृति, रीति–रिवाजों और जीवन के प्रतिमानों में साफ नजर आती किन्तु अन्तक्रिया से जन्में साजिक मूल्य जो सामाजिक सम्बन्धों और जीवन पद्धति की निरन्तरता और स्थायित्व को बनाये रखते हैं किसी समूह एवं समुदाय की पहचान होते हैं। जिन समूहों एवं सम्प्रदाय के मूल्यों में समानता एवं निकटता अधिक होती है उनमें एकीकरण, समायोजन तथा सात्मीकरण की प्रक्रिया की गति तीव्र होती है और जीवन–यापन सहज और आसान हो जाता है। हिन्दू–मुस्लिम शताब्दियों से साथ–साथ रहते आ रहे हैं जिन्हें गंगा–जमनी संस्कृति के दो सुगन्धित पुष्पों से याद किया जाता है। इस लेख में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति की कुछ महत्वपूर्ण समानताओं पर प्रकाश डाला गया है जो महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य शब्दः *मूल्य, समानता, हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति, समायोजन*

समाज की अस्मिता और पहचान मूल्यों से होती है। श्रेष्ठ मूल्य उच्च विचारों एवं व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं जिससे संगठित सम्बन्धों की व्यवस्था सामाजिक पटल पर नजर आती है। भरत विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों, भाषाओं और क्षेत्रों का देश है जिसकी सुन्दरता विभन्नता की धरती से उत्पन्न एकता के पुष्प से प्रकट होती है। हिन्दू और मुसलमान वर्षों से एकता के बंधन में बंधे हुए हैं जिसका कारण हिन्दू सामाजिक व्यवस्था का लचीलापन और इस्लामी आदर्शों में प्रत्येक के लिए आदर व सम्मान के मूल्यों का होना है और दोनों ही समाज के मूल्यों में समायोजन एवं सात्मीकरण की शक्ति का पाया जाना है। यदि दोनों धर्मों के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक मूल्यों का विश्लेषण करें तो निकट की समानताएँ मिलेंगी।

कोविड–19 महामारी में सामाजिक दूरी बनाये रखना दवा एवं औषधि से अधिक उपयोगी समझा गया है। हिन्दू मत में प्रणाम सामाजिक दूरी का आदर मूल्य है वहीं आदाब और सलाम जैसे मूल्य मुसलमानों मे उच्च संस्कति को प्रदर्शित करते हैं। किसी घर के बच्चों से इन मूल्यों का प्रकट होना घर की उच्च संस्कृति का सूचक एवं प्रतीक माना गया है जो सामाजिक दूरी को बनाये रखते हैं। योगा आज के समय की स्वास्थ्यवर्धक औषधि समझी जाती है किन्तु यह हिन्दू–धर्म में पूजा पद्धति का हिस्सा नहीं है। मुसलमान पांच वक्त नमाज पढ़ता है, ईश्वर की इबादत करता है यह नमाज शरीर के समस्त अंगों को प्रकार्यात्मक सक्रियता को बनाये रखती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य को परिभाषित करते हुए कहा कि रोग एवं दुर्बलता रहित व्यक्ति को स्वस्थ नहीं कहा जा सकता बल्कि वह व्यक्ति स्वस्थ है जो मानसिक, शारीरिक और सामाजिक खुशहाली से ओत–प्रोत हो ताकि वह अपने जीवन के बहुमूल्य समय को परिवार एवं राष्ट्र हेतु अधिक उत्पादन में अर्पित करके आर्थिक वृद्धि कर सके और यह तभी सम्भव है जब उसकी इन्द्रियों को आत्मिक सुख प्राप्त हो। नमाज से व्यक्ति को आत्मिक सुख प्राप्त होता है तथा शरीर एवं मस्तिष्क हष्ट–पुष्ट महसूस करता है, शरीर का स्वास्थ्य जहाँ योगा से प्राप्त होता है वहीं

आत्मिक सुख की कामना पुरुषार्थ मूल्यों से की जाती है।

मनुष्य के समाजिक जीवन का परम् एवं अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है। यह लक्ष्य सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं से समबन्धित जिम्मेदारियों एवं कर्त्तव्यों को पूर्ण करने से प्राप्त होता है जैसे आश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ, संस्कार तथा ऋण आदि क्योंकि परिष्कृत जीवन के लाभार्थियों को ही परम आनन्द की प्राप्त हो सकती है। आश्रम व्यवस्था चार आश्रमों पर आधारित है जिसमें विभिन्न कर्तव्यों को पूर्ण करते हुए अपने अन्तिम लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। आश्रम व्यवस्था सामाजिक जीवन को सुनिश्चित करती है जैसे ब्रह्मचर्य आश्रम में ज्ञान प्राप्त करके सादा एवं सदाचारी तथा संयमी गुणों को विकसित करना होता है।गृहस्थ आश्रम सामाजिक एवं आर्थिक ज़िम्मेदारियों का धोतक है। वानप्रस्थ आश्रम बच्चों को ज्ञान देने से सम्बन्धित माना गया है कि व्यक्ति का लक्ष्य यह नहीं है कि अपने लिये ज्ञानार्जन करे बल्कि दूसरों तक पहुचाये भी और सन्यास आश्रम भौतिक मोह का त्याग और तपस्या पर आधारित है। ताकि अपने को मानव कल्याण और ईश्वर प्रेम में समाहित कर दे।

इस्लाम धर्म ने भी व्यक्ति के दिन को चार भागो में विभाजित किया है दिन का एक हिस्सा अल्लाह की इबादत के लिये दूसरा जीविकोपार्जन हेतु तीसरा परिवार के साथ तथा चौथे दिन का हिस्स नातेदारों, रिश्तेदारों, पड़ोसियों और अपने संग–साथियों की सहायता हेतु खबरगीरी के लिए निश्चित किया है। इस्लाम धर्म ने पुरूष एवं महिला के मध्य असमानता का बीज नहीं बोया बल्कि जो अपने कर्तव्यों का निर्वाहन जितने अच्छे और उचित ढंग से करता है वह दूसरे से उतना ही श्रेष्ठ माना जाता है। इस्लाम धर्म ने दो प्रकार के अधिकार बताये है। ईश्वर का अधिकार और मानव जाति का अधिकार किन्तु मानव जाति के अधिकारों का सम्मान करने और उन्हें अदा करने का श्रेय उसने अपने अधिकारों को पूर्ण करने को दिया है। जैसे कुरान में लिखा है कि यदि कोई अपने माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव और व्यवहार करे और उनकी सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति उनके बगैर–कहे करे तो उसने ईश्वरीय अधिकार को पूर्ण किया और उसके उसके मार्ग को पा लिया है।

हिन्दू धर्म का अन्तिम एवं सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य मोक्ष है जो सर्वोत्तम मूल्य है। अर्थात दैवत्य प्रस्थिति को प्राप्त करना जिससे परम आनन्द की अनुभूति होती है जो आत्मा के परमात्मा में विलीन हो जाने से प्राप्त होती है। वहीं इस्लाम धर्म में सफल जीवन का सर्वश्रेष्ठ एवं अन्तिम लक्ष्य "खुदा की मर्जी" को प्राप्त करना है स्वर्ग तो इस मार्ग के प्रत्यनों से प्राप्त ईश्वरीय तोहफ़ा है।

हिन्दू धर्म वसुधैव कुटंबकम (उदारमान व्यक्ति के लिये समूचा संसार उसका परिवार है) का चरितार्थ प्रस्तुत करता है। उसी प्रकार इस्लाम मानव जाति को एक परिवार के रूप में देखता है और किसी एक बेगुनाह व्यक्ति के कत्ल को पूरी मानव जाति का कत्ल मानता है इस्लामी परिप्रेक्ष्य यह है कि सभी को अपना सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक जीवन व्यतीत करने का पूर्ण अधिकार है चाहे वह किसी धर्म, जाति, प्रजाति और क्षेत्र का हो। ईश्वर को माने या न माने। यही कारण है कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त सभी चीज़ें सभी के लिये समान रूप से उपलब्ध है। जैसे हवा पानी, ज़मीन, फसलें, बारिश इत्यादि।

हिन्दू धर्म लोचदार शक्ति की कुंर्जी रही है 'आनो भद्रा कृत्वो यन्तु विश्वतः (अच्छे विचारों को सभी दिशाओं से मेरी ओर प्रवाहित होने दो) हिन्दू परम्परागत संस्कृति का एक मूल्य लचीलापन भी है जिससे इसका दामन सभी के लिये वृहद हो जाता है। लचीलापन ही अच्छे विचारों के आगमन को स्वीकार करता है। अच्छे विचार चाहे किसी धर्म एवं मत से सम्बन्धित हो आत्म–विकास, आत्म–विश्वास, आत्म निर्भरता और मानव कल्याण के मूल्य होते है।

इस्लाम धर्म का विचारों के प्रतिविश्वास है कि अच्छी चीज़ तुम्हे जहां से मिले उसे ले लो "यह न देखो कि कौन कह रहा है यह देखों कि क्या कह रहा है।" अगर बात अच्छी हो तो स्वीकार करो। ईश्वर ने अपने दूत हज़रत यहिया को इब्लीस (शैतान) की बात को भी सुनने को कहा था क्योंकि वह उनसे अच्छी बात कहना चाहता था।

महात्मा गाँधी ने लिखा है कि "अगर मैं हिन्दू धर्म को थोड़ा भी जानता हूँ तो यह अनिवार्य रूप से समावेशी और सदैव वृद्धिशील, सदैव प्रतिक्रियाशील है" हिन्दू धर्म के ये मूल्य इस्लाम धर्म के मूल्यों की व्याख्या करते है। इस्लाम बंद वर्ग को स्वीकार नहीं करता और न ही प्रदत्त प्रस्थिति को उच्च पद के रूप में स्वीकार करता है। बल्कि उस व्यक्ति की सामाजिक व धार्मिक प्रस्थिति उच्च मानता है जो अपेक्षित कर्मो में अच्छा है अर्थात इस्लाम धर्म के किवाड़ सभी के लिये खुले है। सुकर्मी का ससम्मान स्वागत किया जाता है अर्थात इस्लाम धर्म प्रत्येक उस व्यक्ति को गले लगाने को तैयार रहता है जो उसे स्वीकार करना चाहे। इस्लाम धर्म भी प्रतिक्रियाशील है। इस स्थान पर इस्लाम प्रतिक्रियाशीलता को सामाजिक महत्व में देखता है। सामाजिक व्यवस्था व्यक्ति के कर्मों के अनुसार प्रतिक्रिया को निर्धारित करती है अर्थात जैसे कर्म होगें वैसी ही प्रतिक्रिया होगी। इसका उदाहरण "इको" है जैसा हम बोलते है वैसा ही सुनते है उसी प्रकार जैसा कर्म होगा वैसा ही प्रतिफल होगा।

संक्षिप्त रूप में कह सकते है कि हिन्दू धर्म और इस्लाम के सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक मूल्यों में काफ़ी समानता पायी जाती है जो हिन्दू–मुसलमान दोनो समूहों को एकता के सूत्र में बांधकर गंगा–जमनी संस्कृति का धोतक बना देती है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. कुरूक्षेत्र, अप्रैल 2015, वाल्यूम -63, ग्रामीण विकास बजट–2015–16
2. कुराने करीम (मुसलमानों की पवित्र पुस्तक)
3. इन्डिया टुडे, 19 जनवरी– 2022, लेख–पवन के वर्मा 'हिन्दू मूल्यो की लड़ाई'
4. क़सासुल कुरान, कम्पायलर मोहम्मद मोहम्मदी इश्तिहारदी, प्रकाशित–अगस्त 2009, प्रकाशक इदार–ए–मिन्हाजुस सालेहीन,लाहौर